

12-04-2023 पञ्जावली आज पेश हुई। उभय पक्ष अभिभाषक व पैरोकार सरकार उपस्थित। उभय पक्ष अभिभाषक की प्रार्थना-पत्र अंतर्गत धारा-212 राजस्थान कांश्च आर्डी 1955 पर बहस सुनी गयी। वकील प्रार्थी ने अपनी बहस में निवेदन किया कि ग्राम ल्योर के खाता संख्या 240 के ख० न० 444, 488, 489, 531, 532, 541, 609 व 610 कुल कृता 8 कुल रकबा 12.0124 हेक्टर भूमि में जो संयुक्त खातेदारी की भूमि है जिसमें प्रार्थी का 1/3 हिस्सा मिलित है। अप्रार्थीगण संख्या 01ता 17 इस वादग्रस्त आराजियात बुवार-जुतार व कृषि कर्मों को करने में आये दिन बाधा उत्पन्न करते हैं। प्रार्थी अपनी भूमि का बार्ड मिट्टस एवं वाउण्टस खंखण करवा कर अपनी कृषि भूमि की अलग से तरमीम करवाना चाहता है। अतः प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र स्वीकार कर मूल वाद के निस्तारण तक पूर्व में जारी अस्थायी निषेधाज्ञा को कन्फर्म किया जावे। वकील अप्रार्थीगण ने अपनी बहस में निवेदन किया कि मूल वाद में प्रस्तुत जवाब को ही अप्रार्थीगण की बहस मानी जावे। तहसीलदार रूपनगढ़ द्वारा मूल वाद में प्रस्तुत जवाब को ही उभय पक्ष अभिभाषक ने इस प्रार्थना-पत्र में स्वीकार किये जाने हेतु निवेदन किया, जिसे स्वीकार किया गया। वकील अप्रार्थीगण ने निवेदन किया कि मौके पर प्रार्थी व अप्रार्थीगण के बीच किसी भी प्रकार का वाद-विवाद नहीं है। प्रार्थी को किसी भी प्रकार का वादकरण भी उत्पन्न नहीं होता है। अतः प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र आरी हजनि के साथ खारिज करमाया जावे।



हमने उभय पक्ष अभिभाषक की बहस पर मन्जूर किया एवं पञ्जावली में उपलब्ध हस्तावेजात का अवलोकन किया। उभय पक्ष अभिभाषक की बहस एवं पञ्जावली में उपलब्ध हस्तावेजात के आधार पर अस्थायी निषेधाज्ञा के तीनों खिन्नु प्रथम दृष्टया मामला, सुविधा का संतुलन व अपूरणीय क्षात्री प्रार्थी के पक्ष में प्रतीत सिद्ध होते हैं। अतः प्रार्थी द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना-पत्र अंतर्गत धारा-212 राजस्थान कांश्च आर्डी 1955 का स्वीकार-योग्य होने के कारण स्वीकार किया जाता है और मूल वाद के निस्तारण तक पूर्व में जारी अस्थायी निषेधाज्ञा को कन्फर्म किया जावे। पञ्जावली कैसल शुमार लेकर दर्ज नम्बर से कम लेकर हाजिरी दफ्तर हो।

निर्णय आज दिनांक 12.04.2023 को मेरे द्वारा लिखा जाकर सरे-दजलास सुनाया गया।

12.4.23  
उपखण्ड अधिकारी  
रूपनगढ़ (अजमेर)